पुस्तक बत्तीसी

विजय शर्मा

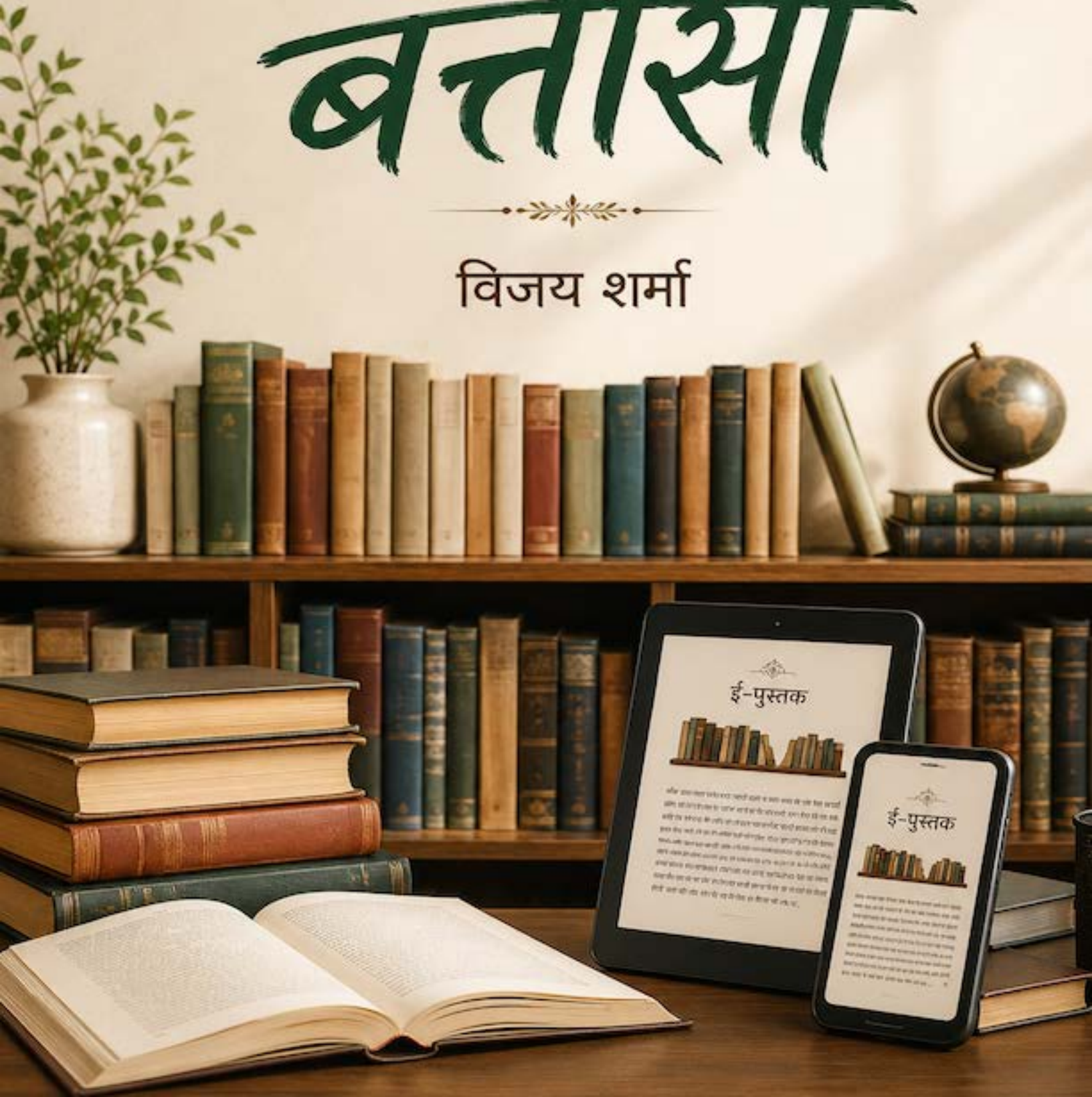

पुस्तक बत्तीसी

विजय शर्मा

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: मई, 2026

© विजय शर्मा

खरीद कर, उधार लेकर कभी न लौटाने वालों, लौटा देने वालों, चोरी से, चुरा कर

पढ़ने वाले पुस्तक प्रेमियों, बल्कि कभी किताब न छूने वालों के लिए

अनुक्रम

अपनी बात	5
पामुक का 'नाइट्स ऑफ़ प्लेग'	8
वेजीटेरियन एक अनोखा उपन्यास	15
विभाजित जीवन की कथा-व्यथा-प्रेम	27
नाजी काल में मानवीयता	33
मौत का रहस्य और सात चाँद	39
सेलेस्टियल बॉडीज: अरब दुनिया की झाँकी	45
द टिन ड्रम: तमस के खिलाफ़ जंग	53
लस्ट फ़ॉर लाइफ़: त्रासद जीवन	58
चेम्मीन: प्रेम और मिथक	62
कलर पर्पल: अश्वेत स्त्री का संघर्ष	68
विभाजन और हृदय का बँटवारा	73
रेड सोर्घम: चीन की अनोखी गाथा	78
बाप्सी सिद्धवा और भारत विभाजन	83
नाइफ़: नफ़रत पर प्रेम की जीत	88
विक्टर फ्रैंकल की लोगोथेरेपी	93

एनिमल फ़ॉर्म की भविष्यवाणी 98

जॉन स्टीनबेक का मोती 102

केनज़ाबुरो ओए का पर्सनल मैटर 107

‘हंगर’: भूख की महागाथा 112

बर्गमैन का जादूई चिराग 118

नसीर के संस्मरण 124

माया एंजेलो की जिजीविषा 129

हेमिंग्वे: युद्ध के विरुद्ध 134

होसे सारामागो की ब्लाइंडनेस 139

एली विज़ेल, नोबेल पुरस्कार एवं होलोकास्ट 144

डोरिस लेसिंग की गोल्डेन नोटबुक 149

द ब्राइडल केनॉपी और गुजरा जमाना 153

गॉन विद द विन्ड: गृहयुद्ध, भूख, गुलामी, बलात्कार 158

डॉक्टर ज़िवागो: युद्ध बीच कविता 163

किताब की चोरी और मृत्यु की कहानी 168

कड़ुवाहट ही मेरी गहन प्रेरणा है 173

आत्म की खोज में गोरा 178

अपनी बात

बहुत कम उम्र में अक्षर जोड़ना सीखने के साथ शुरु हुआ पढ़ने का सिलसिला करीब सात दशक बाद भी जारी है। कभी खूब तेज गति से कभी सुस्त रफ़्तार से। खूब भटकी, खूब गहरे डूबी। कभी कंकड़-पत्थर हाथ लगे अक्सर मोती चुगे। उन गलियों, सड़कों की सैर की जिनके बारे में कभी सोचा-जाना न था। यह सब हुआ क्योंकि उत्सुकता लगी रही जीवन के बारे में जानने-समझने की। इस तरह एक जीवन में कई-कई जीवन के अनुभव से गुजरना हो रहा है। पढ़े हुए को जीवन में उतारने का प्रयास किया। इस विश्वपुस्तक- यात्रा का मेरे विकास में अवश्य एवं महत्वपूर्ण हाथ है।

मेरी पढ़ने की सूचि में तकरीबन सब प्रकार की किताबें शामिल हैं। शुरु में कुछ खास पल्ले नहीं पड़ता था, क्या अब पढ़ा हुआ पूरा समझ में आता है? यह प्रश्न विचारणीय है। कई विदेशी सभ्यता-संस्कृति से परिचय हुआ। बाहरी व्यक्ति कभी किसी सभ्यता-संस्कृति की सूक्ष्मता को पूरा नहीं जान सकता है। अपने देश की सभ्यता-संस्कृति को पूरी तरह जानने का दावा करना एक तरह का बड़बोलापन है। खासकर भारत जैसे बहु सभ्यता-संस्कृति वाले देश के विषय में दावा करना। जानने-समझने की प्रक्रिया अनंत है, निरंतर चलती रहती है। किताबें उसमें सहायक होती हैं।

किताबों में डूबते हुए नोबेल पुरस्कृत साहित्य एवं विजेता साहित्यकारों से परिचय हुआ। इसका एक नतीजा इस क्षेत्र की किताबों का न केवल पढ़ना, वरन अध्ययन-मनन। नोट्स बनाना, नोट्स का पुस्तकों में परिवर्तित होना। जिसके फ़लस्वरूप पुस्तक प्रकाशन का शुरु होना। सिलसिला बनता गया और इस विषय पर मेरी कई पुस्तकें आ गईं।

किताबों से गुजरते हुए फ़िल्मों का चस्का लग गया। कभी किताब पहले पढ़ी, फ़िर उस पर आधारित फ़िल्म देखी, कभी फ़िल्म देख कर उसकी आधार किताब पढ़ी। इस विषय पर भी पिछले कई दशक से जम कर काम किया और इससे संबंधित पुस्तकें प्रकाशित हुईं।

अधिकतर गद्य की किताबें पढ़ीं, गद्य में ही लेखन किया। कई भाषाओं की किताबें अक्सर इंग्लिश में पढ़ीं। हिन्दी अनुवाद हो तो भी मुझे इंग्लिश अनुवाद अधिक भाता है। लिखा सदैव हिन्दी में है।

कहते हैं, जिसके पात्र में जो होता है, वह वही देता है, उसे और-और वही मिलता भी है। मेरी लाइब्रेरी में किताबों की शक्ल में ढ़ेरों किताबें हैं। अब ई-बुक की संख्या उनसे काफ़ी अधिक हो गई है। उपहार में किताबें मिलती हैं। लेखक किताबें भेजते हैं। सिर्फ़ गद्य में काम करती हूँ, जानते हुए भी कुछ लोग कविता की किताबें भेज देते हैं। सब पढ़ना न तो संभव है और न इसकी अपेक्षा होनी चाहिए। पाठक की अपनी रूचि